ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

मीरा के पद

कक्षा - दसवीं

विषय – हिंदी
पाठ : ४
पाठ का नाम : पद (मीरा)
PPT-1

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

मीरा के पद

जीवन परिचय

मीराबाई का जन्म राजस्थान में मेड़ता के पास चौकड़ी ग्राम में सन् 1498 ई० के आसपास हुआ था। इनके पिता का नाम रतनसिंह था। उदयपुर के राणा सांगा के पुत्र भोजराज के साथ इनका विवाह हुआ था, किन्तु विवाह के थोड़े ही दिनों बाद इनके पति की मृत्यु हो गयी। **मीरा** बचपन से ही भगवान् कृष्ण के प्रति अनुरक्त थीं।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

पाठ प्रवेश

लोक कथाओं के अनुसार अपने जीवन में आए कठिन दुखों से मुक्ति पाने के लिए मीरा घर - परिवार छोड़ कर वृंदावन में जा बसी थी और कृष्ण प्रेम में लीन हो गई थी। इनकी रचनाओं में इनके आराध्य (कृष्ण) कहीं निर्गुण निराकार ब्रह्मा अर्थात जिसका कोई रूप आकार न हो ऐसे प्रभु , कहीं सगुण साकार गोपी वल्लभ श्रीकृष्ण और कहीं निर्मोही परदेसी जोगी अर्थात जिसे किसी की परवाह नहीं ऐसे संत के रूप में दिखाई देते हैं।
प्रस्तुत पाठ में संकलित दोनों पद मीरा के इन्हीं आराध्य अर्थात श्रीकृष्ण को समर्पित हैं। मीरा अपने प्रभु की झूठी प्रशंसा भी करती है ,प्यार भी करती हैं और अवसर आने पर डांटने से भी नहीं डरती। श्रीकृष्ण की शक्तियों व सामर्थ्य का गुणगान भी करती हैं और उनको उनके कर्तव्य भी याद दिलाती हैं।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

१ सामान्य उद्देश्य :

१) छात्रों में काव्य के प्रति रुचि उत्पन्न करना ।
२) छात्रों को कविता वाचन का अभ्यास कराना ।
३) छात्रों में भाव तथा सौंदर्य का विकास करना ।
४) छात्रों को ईष्ट देवता के प्रति भक्ति भावना उत्पन्न कराना।

२ विशिष्ट उद्देश्य :

१) छात्र काव्य के भावों को बोधगम्य करके अपने शब्दों में प्रस्तुत कर सकेंगे ।
२) छात्र प्रिय भगवान के प्रति भक्ति से रहने का प्रयास करेंगे ।
३) छात्र भाव – सौंदर्य और शिल्प सौंदर्य को समझ सकेंगे ।
४) छात्र मीरा की अनन्य भक्ति-भावना गोविंद के प्रति ग्रहण कर सकेंगे ।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

पाठ सार

इन पदों में मीरा बाई श्री कृष्ण का भक्तों के प्रति प्रेम और अपना श्री कृष्ण के प्रति भक्ति - भाव का वर्णन करती है। पहले पद में मीरा श्री कृष्ण से कहती हैं कि जिस प्रकार आपने द्रौपदी,प्रह्लाद और ऐरावत के दुखों को दूर किया था उसी तरह मेरे भी सारे दुखों का नाश कर दो।

दूसरे पद में मीरा श्री कृष्ण के दर्शन का एक भी मौका हाथ से जाने नहीं देना चाहती , वह श्री कृष्ण की दासी बनाने को तैयार है ,बाग़ - बगीचे लगाने को भी तैयार है ,गली-गली में श्री कृष्ण की लीलाओं का बखान भी करना चाहती है ,ऊँचे-ऊँचे महल भी बनाना चाहती है , ताकि दर्शन का एक भी मौका न चुके।

श्री कृष्ण के मन मोहक रूप का वर्णन भी किया है और मीरा कृष्ण के दर्शन के लिए इतनी व्याकुल है की आधी रात को ही कृष्ण को दर्शन देने के लिए बुला रही है।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

गृहकार्य - कविता को पढ़कर कठिन शब्दों को रेखांकित करना ।

ODM
EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow